एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 11 (नवम्बर, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

रजनीगंधा की खेती एवं कीट और रोग प्रबंधन

*पंकज कुमार मीणा
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: pankajmeena626@gmail.com

रजनीगंधा एक सुगंधित कर्तित पुष्प है। इसका उपयोग मुख्य रूप से कट लावर्स, बुके बनाने एवं शोभाकारी उद्यानों के लिए किया जाता है। इसके पुष्प पुष्पडंडी पर लगते हैं जो सफेद रंग के होते हैं। इसके पुष्पों से सुगंधित तेल भी निकाला जाता है जो सौन्दर्य प्रसाधन उत्पादन में काम लिया जाता है। डबल पुष्प वाली किस्मों का उपयोग कट लावर्स एवं प्रदर्शनी हेतु किया जाता है जबकि सिंगल पुष्प वाली किस्में सुगंधित तेल एवं सजावट हेतु उपयुक्त हैं।

जलवायु एवं भूमि

रजनीगंधा के लिए गर्म एवं नम जलवायु की आवश्यकता पड़ती है। उचित जल निकास वाली हल्की दोमट मिट्टी इसके लिए उपयुक्त रहती है।

उन्नत किस्में

सिंगल पुष्प वाली किस्मों में श्रृंगार, फुले रजनी, अर्का प्राज्ज्वल, अर्का निरन्तरा, बिधान स्निगधा, बिधान ज्योति आदि।
डबल पुष्प वाली किस्मों में अर्का सुवासिनी, अर्का वैभव, फुले रजत, पर्ल डबल, स्वर्ण रेखा आदि।

खाद एवं उर्वरक

गोबर की अच्छी सड़ी हुई खाद 200 से 250 क्विंटल प्रति हैक्टर की दर से खेत की तैयारी के समय खेत में डालनी चाहिए। इसके अतिरिक्त 200 किलो फास्फोरस व 200 किलो पोटाश प्रति हैक्टर कंदों की रोपाई के समय देना चाहिए। नत्रजन की 125 किलो मात्रा रोपाई के एक माह बाद व 125 किलो नत्रजन दो माह बाद प्रति हैक्टर देकर सिंचाई कर देनी चाहिए।

प्रवर्धन एवं रोपाई

रजनीगंधा का प्रवर्धन शल्क कंदों द्वारा किया जाता है। 1.0 से 1.5 सेमी. व्यास वाले रजनीगंधा के शल्क कन्द रोपाई के लिए उपयुक्त रहते हैं, जिन पर पुष्प डंडी बन जाती है। तैयार खेत या क्यारी में शल्क कन्दों की रोपाई 30 सेमी. कतार से कतार एवं 20 सेमी. पौधे से पौधे की दूरी रखते हुए, 4 से 5 सेमी. की गहराई पर फरवरी-मार्च माह में करनी चाहिए। अधिक अवधि तक पुष्प प्राप्त करने के लिए 15 दिन अंतराल पर क्रमबद्ध कंद की रोपाई 30 मई तक करना लाभकारी है।

सिंचाई एवं निराई गुड़ाई

कंदों की रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। कंदो के उगने तक हल्की-हल्की सिंचाई करके नमी बराबर बनाए रखनी चाहिए। इसके बाद गर्मी में 5 से 7 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए। पौधों की अच्छी बढ़वार व खरपतवार नियंत्रण के लिए 3 से 4 बार निराई-गुड़ाई अवश्य करनी चाहिए।

फूलों की कटाई

कन्दों की रोपाई के 90 से 95 दिन बाद पुष्प डंडियां काटने योग्य हो जाती हैं। पूर्ण विकसित पुष्प डंडी को जब नीचे के दो कलिका पूर्ण विकसित एवं खुलने की अवस्था पर तेज धार वाले चाकू से सुबह या षाम के समय काट कर साफ पानी से भरी प्लास्टिक की बाल्टी में इन कटी हुई पुष्पडंडियों को रखना चाहिए। माला के लिए पुर्ण विकसित खुले पुष्पों को पुष्प डंडी से चुन लेना चाहिए।

कन्दों की खुदाई

कंद की रोपाई के बाद इन कंदों को तीन वर्ष तक उसी खेत में रखकर पुष्पडंडियों की पैदावार ली जा सकती है। तीन वर्ष बाद कंद की खुदाई करके 0.2 प्रतिशत बाविस्टन के घोल से उपचारित कर ठंडी एवं सूखी जगह पर संग्रहित कर लेना चाहिए।

कटाई उपरान्त प्रबन्धन

कर्तित पुष्प को कटाई के तुरन्त पश्चात् पानी में रख देना चाहिए साथ ही जीवन क्षमता बढ़ाने हेतु 5 प्रतिषत शक्करा 300 पी.पी.एम. एल्युमिनियम सल्फेट के घोल से उपचारित करना चाहिए। कर्तित पुष्प स्पाईक की लम्बाई, पुष्प दण्डिका पर पुष्पों की संख्या एवं पुष्प दण्डिका के वजन के आधार पर रजनीगंधा को श्रेणीकृत किया जाता है। बाजार में भेजने के लिए खुले पुष्पों को बांस की टोकरियों में एवं पुष्प-दण्डिकाओं को सौ-सौ के बण्डल बनाकर कॉरूगेटेड कार्डबोर्ड बक्सों, लाइनर या अखबार में लपेट कर पैक करना चाहिए।

उपज

रजनीगंधा से 2-3 रुपये प्रति पुष्प-दण्डिका विक्रय करने पर कुल आय 350000 एवं 1-1.5 रुपये प्रति कन्द के हिसाब 225000 रूपये प्रति हेक्टर आय प्राप्त कर सकते हैं। शुद्ध आय 2.5 से 3.0 लाख रुपये प्रति हेक्टर तक प्राप्त की जा सकती है।

कीट एवं व्याधि प्रबन्धन

ग्रासहोपर : यह नई पत्तियों एवं पुष्प कलिका को खाता है, इसके नियंत्रण हेतु मैलाथियॉन या डाईमिथोएट का एक मि.ली. अथवा क्यूनालफॉस 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से पौधों पर छिड़काव करें।

रैड स्पाइडर माइट: यह पत्तियों से रस चूसने वाला कीट है, इसकी रोकथाम के लिए केल्थेन नामक दवा का 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

तना विगलन: यह रोग स्केलेरोशियम रोल्फसाई नामक फफूंद द्वारा होता है जिसके नियंत्रण हेतु मरक्यूरिक क्लोराइड के 0.1 मि.ली. प्रति लीटर एवं फोरमेलिन के 0.2 मि.ली. प्रति लीटर के हिसाब से घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव करें।

पुष्प कलिका विगलन यह इरविनिया प्रजाति के जीवाणु द्वारा होता है। इसकी रोकथाम हेतु रोगग्रस्त पौधों को निकालकर अलग कर देना चाहिए। तथा कम संक्रमित पौधों पर 1000 लीटर जल में 1 भाग कोरोसिव सब्लिमेट का घोल बनाकर छिड़काव करें।

बोट्राइटिस धब्बे तथा अंगमारी: यह रोग बोट्राइटिस इलिप्टिका के द्वारा उत्पन्न होता है।

इसके नियंत्रण हेतु पौधों पर (क) अमोनिकल कॉपर, 2.0 लीटर प्रति 100 लीटर पानी (ख) ग्रीनो तथा (ग) ओ-हाइड्रॉक्सी डाइफिनाइल (1:200) का सोडियम लवण का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करते रहना चाहिए।